Part I Hons III (A)

Write a short essay on the caste system of South East Asia from the earliest time to 1471 A.D.

(5) दक्षिण पूर्व एशिया में जाति व्यवस्था प्रारंभिक काल से 1471

Ans. दक्षिण पूर्वी एशिया में जाति व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान प्राचीन काल से था। जाति व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान प्राचीन काल से था। जाति व्यवस्था के आधार पर प्रायः धर्म कर्म का विभाजन प्रचलित था तथा उच्चवर्णी या जाति के लोगों को समाज में प्रतिष्ठा की दृष्टिकोण से देखा जाता था। इस प्रकार जाति व्यवस्था की जड़े दिनों दिन मजबूत होती गयी।

दक्षिण पूर्वी एशिया में भारतीयों ने जाकर उपनिवेश स्थापित कर साम्राज्य का विस्तार किया जो 15 वीं शताब्दी तक किसी न किसी रूप में चलकर रहा। भारत से जानेवाले लोग अपने साथ भारतीय रीति रीवाज परम्परा, जाति व्यवस्था, रहन सहन, खान पान इत्यादि को भी वहाँ कायम रखा। भारतीय धार्मिक कृत्यों, यज्ञ, बलिदान इत्यादि की प्रक्रिया के कारण दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में भी भारत की भांति कर्म कांड के रहने से ब्राह्मण तथा अन्य जातियों की प्रधानता बनी रही।

भारत की तरह दक्षिणी पूर्वी एशिया के विभिन्न देशों में समाज की विभाजन की व्यवस्था चार वर्णो पर आधारित है तथा वहाँ भी यह व्यवस्था बनायी गयी कि प्रत्येक मनुष्य अपने वर्ण का पालन करें। दक्षिण पूर्वी एशिया में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र चार प्रकार की जाति व्यवस्था थी।

जावा के एतिहासिक स्रोत से वहाँ के जाति व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। वहाँ ब्राह्मण आदि चार वर्णो का वर्णन मिलता है। भारत की तरह जावा में भी ब्राह्मणों का कार्य यज्ञ इत्यादि कार्य था। जावा के अनेकों अभिलेखों से इस बात की पुष्टि होती है कि ब्राह्मण यज्ञ कराते थे तथा उन्हे दान दक्षिणा दिया जाता था।

बालि, सुमात्रा, बोर्नियों तथा मलाया में भी जाति व्यवस्था चार वर्णो पर आधारित थी जो

Scanned with CamScanner

ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र के रूप में जाना जाता है। बालि में ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य को द्विजाति कहा जाता था तथा शुद्र को एक जाति कहा जाता था।

बालि, सुमात्रा, बोर्नियो मलाया तथा जावा में अनुलोम विवाह की अनुमति है तथा प्रतिलोम विवाह को बुरा माना जाता है, अनुलोम विवाह के अंतर्गत उच्च जाति का पुरुष अपने से हीन जाति की स्त्री से विवाह कर सकता था। लेकिन प्रतिलोम विवाह में कोई पुरुष अपने से उच्चतर जाति की स्त्री से विवाह नहीं कर सकता था। इन देशों में संकर विवाहों से उत्पन्न बच्चे की जाति उसके पिता की जाति होता था। बालि में ब्राह्मणों के दो वर्ग हैं, पहला शैव ब्राह्मण तथा दूसरा बौद्ध ब्राह्मण। इस प्रकार इन देशों के जाति व्यवस्था में हम पाते हैं कि ये पूर्णतः चार जाति में विभक्त है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के कम्बुज देश के जाति व्यवस्था के बारे में यही ज्ञात होता है कि वहाँ की जाति व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म के आधार पर बनी थी। कम्बुज देश से प्राप्त अभिलेखों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वहाँ की जाति व्यवस्था चार वर्णों पर आधारित था, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य तथा शुद्र के नाम से जाने जाते थे। जयवर्मा सप्तम के - से लोंग अभिलेख में चार वर्णों का वर्णन है "चिकित्स्या अय चत्वारो वर्णा द्वो मिसगो तथै।"

(ii) भारत की भांति कम्बुज के चार वर्णों में ब्राह्मण का स्थान श्रेष्ठ था। इनका वैवाहिक सम्बंध राजवंश में भी स्थापित होते थे। इस विवाह के फलस्वरूप ब्रह्म क्षत्रिय जाति उत्पन्न हुई। वैश्य जाति का किसी लेख में व्यक्तिगत रूप से वर्णन नहीं मिलता है यद्यपि वे समाज के अंग थे। इसकी पुष्टि के लिए चम्पा में एक लेख मिला है।

कम्बुज देश में ब्राह्मणों को उच्च स्थान

प्राप्त करने का श्रेय उन कौण्डिन्य ब्राह्मणों को है उच्च स्थान जिन्होंने कम्बुज देश में आकर अपनी सत्ता स्थापित कर वहाँ की रानियों के साथ वैवाहिक सम्बंध स्थापित किया।

चटर्जी के अनुसार ये कौण्डिन्य ब्राह्मण लोग काले रंग के थे। उनके लम्बे बाल थे और वे वाराणसी के मूल निवासी थे। कम्बुज के लेखों में भारत से आये बहुत से ब्राह्मणों का वर्णन है।

दक्षिणी पूर्वी एशिया के कम्बुज देश में ब्राह्मणों की भाँति क्षत्रिय को भी उच्च स्थान प्राप्त था वहाँ के राजकुल प्रायः क्षत्रिय जाति के थे। भारत के ब्राह्मण की तरह क्षत्रिय लोग भी बड़ी संख्या में कम्बुज देश में निवास किये थे। यह भी सम्भावना व्यक्त किया जाता है कि वहाँ के उच्च कुलों के लोग जो भारतीय धर्म, संस्कृति आदि को अपना लिए थे, उन्हें क्षत्रिय जाति के अन्तर्गत मान लिया गया था।

जाति व्यवस्था के अन्तर्गत कम्बुज में ब्राह्मण और क्षत्रियों में परस्पर विवाह सम्बंध प्रचलित था। विवाह सम्बंध दोनों जातियों की कन्या के साथ समानता के आधार पर होता था।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के मतानुसार भारत से जाकर जो उपनिवेशक दक्षिण पूर्वी एशिया के इन प्रदेशों में आबाद हुए थे, उनमें वैश्य भी अवश्य होंगे।

कम्बुज के राजा अपने देश के समाज संगठन को भारत के चार जाति पर आधारित समाज के अनुरूप बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

प्रखत त वेओ अभिलेख में राजा सूर्यवर्मन के विषय में यह कहा गया है कि उसने अपने राज्य में वर्ण व्यवस्था की स्थापना की और शिवाचार्य नामक विद्वान को श्रेष्ठतमता की उपाधि प्रदान की गयी।

श्री सूर्यवर्मणो राज्ये वर्णभागे कृपेपि च।
संपंद प्राप्य सद्भक्तया वर्णश्रेष्ठत्वाद्विस्थित:

राजा जयवर्मा पंचम ने दो वर्णों का

का निर्माण किया गया है एगुक और कर्मान्तर कहते है वे। कम्बुज के जाति का आधार कर्म न होकर जन्म था। ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न व्यक्ति ब्राह्मण ही होता था चाहे वह किसी भी व्यवसाय को क्यों न करता हो। इस प्रकार हम पाते हैं कि कम्बुज में जाति व्यवस्था का संगठन काफी दृढ़

दक्षिण-पूर्वी एशिया के अन्य देशों की तरह चम्पा का जाति व्यवस्था भी वर्णाश्रम पर आधारित था अन्य देशों की तरह भारतीयों ने वहां जाकर अपने साथ जाति व्यवस्था तथा अन्य चीजों को साथ ले गये। इन उपनिवेशकों में प्रधानतया ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्णों के लोग थे। यद्यपि बहुत से वैश्य वर्ण के लोग व्यक्ति व्यापार आदि के लिए वहां बस गये थे। शूद्र के विषय में निश्चित कहना कठिन है।

चम्पा में जाति व्यवस्था में ब्राह्मण और क्षत्रिय जाति समाज के मुख्य अंग थे तथा उनमें पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित रहता था। डा० पुरी के अनुसार यह कहना कठीन है कि पराजित चम अथवा वहीं के आदि निवासियों को शुद्र की श्रेणी में रखा गया था या नहीं

हालांकि चम्पा और भारत के समाज में पर्याप्त अन्तर था, पर वहां के भारतीय या भारती संस्कृति को अपनाये हुए राजा, वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना के आदेश को सदा सम्मुख रखते थे।

डा० पुरी के मतानुसार चम्पा में भी ब्राह्मण क्षत्रिय वैवाहिक सम्बंध से उत्पन्न बालक को ब्रह्मक्षत्रिय अथवा क्षत्रिय कहा जाता था।

दक्षिण पूर्वी एशिया के चम्पा में ब्राह्मणो तथा क्षत्रियों की उच्च स्थान की पुष्टि इस बात से भी होती है कि समाज में ब्राह्मण की हत्या को घोर पाप माना जाता था। 657 A.D के माई सोन अभिलेख में राजा द्वारा प्रतिष्ठापित भगवान ईशानेश्वर श्री मम्भुमदेश्वर की मूर्तियों की निरन्तर पूजा

की व्यवस्था के उल्लेख के पश्चात यह कहा गया है कि जो कोई इन्हें किसी भी प्रकार से क्षति पहुँचायेगा उसे ब्राह्मण की हत्या का पाप लगेगा तथा जो कोई इनकी भलीभाँति रक्षा करेगा उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होगा। ब्रह्महत्या से बढ़कर कोई पाप नहीं है तथा अश्वमेध से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।

"ये ध्वंसयन्ति ते ब्रह्महत्याफलं गनक्ष कल्पेऽवस्त्रम् मनुभवन्ति ये परिपालयन्ति तेऽश्वमेधफलं ब्रह्महत्या स्वर्धामेध्यां न परं पुण्य पापयोरित्यागा पादिति प्रतिज्ञातम्।

इससे विदित होता है कि ब्राह्मणों का स्थान जाति व्यवस्था से ऊँचा माना जाता था।

एक अभिलेख में अन्य राजाओं और क्षत्रियों के साथ ब्राह्मणों और पुरोहितों द्वारा भी राजा के चरणों का स्पर्श करने का वर्णन है —

ब्राह्मण पुरोहितागसन क्षत्रान्यनपर पतिवृन्द जुष्ट चरणारविन्द

लेकिन इसमें यह मान लेना गलत होगा कि समाज में ब्राह्मणों की तुलना में क्षत्रियों का स्थान अधिक ऊँचा था।

801 A.D के उत्कीर्ण लै-लमाव अभिलेख में पुरोहित आदि के गुणों का वर्णन मिलता है —

सर्वाणीमानि वन्चनानि पुरोहितागृस ब्राह्मण पण्डित तापसगणांना यदा च्यो परम पुरोहितेन दृश्यमाने।

इस अभिलेख में यह वर्णन मिलता है कि पुरोहितों, अग्रासों, पण्डितों और तापसों के गणों या संगठनों की भी चम्पा में सत्ता थी, जिन्हें महापुरोहितों द्वारा सम्बोधित किया जाता था।

दक्षिण पूर्वी एशिया के हिन्देनेशिया में भी भारत की भाँति चार वर्णों का वर्णन मिलता है। साहित्य और लेखों के द्वारा भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का उल्लेख मिलता है। एरलंग के पैनंगुगेन लेख में श्रेष्ठ ब्राह्मणों और मुनियों के बीच सम्राट के कीर्ति का उल्लेख है —

"द्विजपीत मुनिमध्ये कीर्तिमेवादरत्सः"

भारतीय जाति आज भी बली में पायी जाती। एक निंग व्यवहार नामक प्राचीन जावानी ग्रंथ में जाति सम्बंधी कुछ नियम दिये गये हैं। जातियों की उत्पत्ति ब्रह्मा के मस्तक, बाहु, जांघ और पैरों से हुई है। इसमें विभिन्न जातियों द्वारा वर्जित भोजन का भी उल्लेख है — जैसे कुत्ते, चूहे, बंदर साँप का मांस खाना वर्जित बताया गया है। चतुर्वर्ण के व्यवसायों का वर्णन भी किसी किसी ग्रंथ में मिलता है। चीनी स्त्रोतों के अनुसार मलेशिया के समाज में दो वर्ग के व्यक्ति थे — राजकीय और साधारण। इस प्रकार दक्षिण पूर्वी एशिया में जाति व्यवस्था कायम थी।

दक्षिण पूर्वी एशिया के स्याम या थाइलैंड के जाति व्यवस्था के विषय में विशेष जानकारी का अभाव है। फिर भी हम देखते हैं कि थाईलैंड की भौगोलिक स्थिति चीन के साथ होने पर भी भारतीय संस्कृति को अपनाया जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि थाईलैंड में भी भारत की तरह जाति व्यवस्था रहा होगा।

दक्षिण पूर्वी एशिया के वर्मा में आधुनिक समय में मुम्म या ब्रह्मा जाति का निवास है। इस मुम्म लोगों से पहले वरमा में मों और प्यू जातियों का निवास था। इन जातियों ने भारतीय संस्कृति को अपना लिया था। बरमा में भारतीय सम्भवतः तलिगानां से गये थे इसलिए तलैंग जाति कहलाते थे। दक्षिण पूर्वी एशिया के अन्य देशों की तरह बरमा में जाति व्यवस्था का विशेष अध्ययन का अभाव है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के लंका में भारतीय संस्कृति के प्रमाण को देखकर यह कहा जा सकता है कि वहां के जाति व्यवस्था भी भारतीय प्रभाव

Scanned with CamScanner

में आये होंगे लेकिन लंका की जाति व्यवस्था का विशेष जानकारी का अभाव है। लंका तथा भारत के राजाओं में विवाह सम्बन्ध होते रहते थे। लंका के राजा महेन्द्र श्री संघबोधि (953-69) का विवाह कलिंग की राजकुमारी के साथ हुआ था। इस प्रकार के अनेक उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि वैवाहिक सम्बन्ध में कुछ न कुछ जातिय आधार अवश्य होगा। उपयुक्त विवरण से हम पाते हैं कि दक्षिण पूर्वी एशिया में भी भारतीयों की तरह चार जातियों पर समाज का संगठन आधारित था। भारत की भाँति वहाँ के उच्च जातियों का समाज में आदर सम्मान तथा अधिकार अधिक था।